समाज में धर्म एवं संस्कृति

Religion & Culture in Society

"संस्कृति मन, आत्मा एवं ज्ञान का विस्तार है।
जहाँ ज्ञान समाप्त हो, वहाँ धर्म शुरू होता है।।"

—डॉ० अशोक कुमार यादव

डॉ० अशोक कुमार यादव

समाज में धर्म एवं संस्कृति

Religion & Culture in Society

डॉ० अशोक कुमार यादव

एम० एससी० (रसायन विज्ञान), एलएल०बी०,
एम०एड०, एम० ए० (समाजशास्त्र),
नेट, स्लेट (सैट) एवं पीएच० डी० (समाजशास्त्र)

सहायक आचार्य (समाजशास्त्र)

राजकीय महाविद्यालय, मालाखेड़ा,
अलवर (राज०)

ASSOCIATED
PUBLISHING HOUSE

प्रथम संस्करण 2023

ISBN : 978-81-965309-7-6

© लेखक

इस पुस्तक के किसी भी अंश का प्रतिलिपीकरण, ऐसे यन्त्र में भण्डारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी विधि से, यांत्रिक फोटो प्रतिलिपि, इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य रीति से, बिना लेखक/प्रकाशन की पूर्व अनुमति के नहीं किया जा सकता है।

प्रकाशक :

Associated Publishing House

ब्लॉक–77, संजय प्लेस,

आगरा।

विषय-सूची

अध्याय – 01 धर्म एवं संस्कृति 01–08
डॉ० स्वदेश यादव

अध्याय – 02 धर्म का सामान्य परिचय 09–18
डॉ० साधना संगम

अध्याय – 03 धर्म का राजनीतिक प्रभाव 19–26
डॉ० टीकम चन्द बैरवा

अध्याय – 04 धर्म एवं संस्कृति का वैश्वीकरण 27–33
सोमवीर

अध्याय – 05 संस्कृति एवं सभ्यता 34–42
डॉ० संजय कुमार शर्मा

अध्याय – 06 संस्कृति का संक्षिप्त परिचय 43–53
डॉ० लक्ष्मी देवी शर्मा

अध्याय – 07 विभिन्न धर्मों में विवाह 54–61
डॉ० हरि राम तिहाड़ा

Chapter - 08 Culture, Spirituality, Religion and Health 62–69
Dr. Kuldeep Yadav

Chapter - 09 General Introduction of Culture 70–83
Pappi Bai

Chapter - 10 Concept of Culture 84–92
Dr. Dhara Singh Kamval

Chapter - 11 Religious and Cultural Influences 93–102
Dr. Anjana Verma

Chapter - 12 Psychology of Culture and Religion : Introduction to the JCCP Special Issue 103–113
Vandna

Chapter - 13 Religion and Culture 114–125
Dr. Sunita Kumari

Chapter - 14 Political & Sociology View of Religion 126–133
Shalinee Singh Chauhan

Chapter - 15 Religion and Mental Health 134–139
Dr. Lokesh Kumar Sharma

Chapter - 16 Globalization and Culture 140–146
Surendra Singh

Chapter - 17 Cultural Nationalism 147–156
Dr. Laxmi Sharma

Chapter - 18 Religion and Gender Inequality 157–162
Kalu Ram

Chapter - 19 Religious Crime and Law 163–172
Ritu Yadav

Chapter - 20 Moral Judgment of Religion & Culture 173–180
Dr. Vipul Yadav

Chapter - 21 Religious and Culture Education 181—191
Pratibha

Chapter - 22 Religion Influence Marriage 192—200
Yajush Kajla

Chapter - 23 Elements of Religion and Culture 201—210
Dr. Suman Lata

Chapter - 24 Meaning and Significance of Culture 211—224
Dr. Neelu Lamba

संदर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography) 225—247

04
अध्याय

धर्म एवं संस्कृति का वैश्वीकरण

सोमवीर
एक्सटेंशन लेक्चरर (राजनीति विज्ञान)
राजकीय महाविद्यालय,
नारनौल (हरियाणा)

प्रस्तावना

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के परिप्रेक्ष्य से अध्ययन करने पर धर्म और संस्कृति जटिल विचार प्रतीत होते हैं। आखिरकार, विद्वानों और दार्शनिकों ने इन शब्दों के अर्थ और हमारे आस–पास की सामाजिक दुनिया की हमारी समझ पर उनके प्रभाव पर लंबे समय से बहस की है। तो क्या वैश्विक स्तर पर धर्म और संस्कृति का अध्ययन करना असंभव रूप से जटिल कार्य है ? सौभाग्य से, उत्तर नहीं है, क्योंकि हम प्रत्येक शब्द से क्या मतलब है ? इसके बारे में भ्रमित हुए बिना जटिलता को पहचान सकते हैं, और उसका सम्मान कर सकते हैं। इस अध्याय में, जो पुस्तक के पहले खंड को पूरा करता है, हम यह पता लगाऐंगे, कि वैश्विक मामलों में धार्मिक और सांस्कृतिक कारकों के बारे में सोचना, उन अन्य मुद्दों की तरह ही अभिन्न क्यों है ? जिन्हें हमने अब तक कवर किया है।

"धर्म" और "संस्कृति" शब्दों से हमारा क्या तात्पर्य है ? विश्व राजनीति के क्षेत्र में हम धर्म और संस्कृति के उदाहरण कहाँ देख सकते हैं ? धार्मिक और सांस्कृतिक कारक एक साथ रहने की हमारी क्षमता पर कैसे प्रभाव डालते हैं ? हमारी जाँच इन सवालों के समाधान के लिए शुरू होगी। जैसा कि हम ऐसा करते हैं, हम रब्बी और राजनीतिक दार्शनिक जोनाथन सैक्स के प्रोत्साहन को ध्यान में रखेंगे, जिन्होंने लिखा था, कि कभी–कभी यह समझने के लिए, कि किसी चीज़ में क्या दाँव पर लग सकता है ? मानचित्र के बजाय आरेख बनाना, सरल बनाना सहायक होता है। धर्म और संस्कृति के मूल्य के बारे में, आई० आर० सोच में वास्तव में एक बदलाव आया है।

हम धर्म और संस्कृति को इस प्रकार कैसे परिभाषित कर सकते हैं ? जो विश्व राजनीति के अध्ययन के लिए उपयोगी हो, एक समग्र चित्र बनाने के लिए, उन्हें वापस एक साथ लाने से पहले प्रत्येक शब्द को अलग से स्केच करना महत्वपूर्ण है। हम धर्म से शुरू करते हैं, एक ऐसी श्रेणी, जिसे विद्वानों और नीति निर्माताओं ने एक बार आई० आर० के अध्ययन के लिए अप्रासंगिक माना था, क्योंकि इसे आधुनिक राज्यों और उनके नागरिकों के आर्थिक और सुरक्षा हितों के लिए महत्वपूर्ण नहीं माना जाता था। फिर भी, अब कई विद्वान मानते हैं, कि धर्म को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जबकि संस्कृति के विचार को आई० आर० में समान रूप से कम महत्व दिया गया है, विश्व मामलों के विश्लेषण में इसका समावेश धर्म से पहले का है, और इसे कम विवादास्पद माना जाता है। हम प्रत्येक श्रेणी के चार तत्वों पर विचार करेंगे, और फिर उनके बीच महत्वपूर्ण संबंध बनाएँगे, ताकि धर्म और संस्कृति खंडित विचारों के बजाय समग्र रूप से समझ में आएँ।

धर्म के तत्व

11 सितंबर 2001 को अमेरिका पर अल कायदा के हमलों के बाद, विश्व राजनीति में धर्म का अध्ययन छह गुना बढ़ गया। रॉबर्ट कोहेन के शब्दों में, 09/11 की घटनाओं ने इस एहसास को उकसाया, कि दुनिया को हिला देने वाले राजनीतिक आंदोलनों को, अक्सर धार्मिक उत्साह से बढ़ावा मिला है। वास्तव में, चाहे वह धर्म के नेतृत्व वाली क्राँति का व्यवधान हो, प्राकृतिक आपदाओं पर प्रतिक्रिया देने वाली धार्मिक विकास एजेंसियों का काम हो, धार्मिक राजनयिकों के शांति–प्रयास हो, या असंख्य अन्य उदाहरण हो, हाल के दशकों में वैश्विक मामलों पर एक नजर भी समर्थन करती प्रतीत होती है, समाजशास्त्री पीटर बर्जर की टिप्पणी है, कि आज दुनिया उतनी ही, उग्र रूप से धार्मिक है, जितनी पहले थी, और कुछ जगहों पर तो पहले से कहीं अधिक है।

ऐसा दृष्टिकोण संख्याओं द्वारा भी समर्थित प्रतीत होता है, क्योंकि दुनिया भर में, दस में से आठ से अधिक लोग, एक धार्मिक समूह के साथ पहचान करते

हैं। क्या आपकी गिनती 20 या 80 प्रतिशत में है ? क्या आपको लगता है, कि वैश्विक मामलों पर धार्मिक प्रभाव एक स्वागतयोग्य समावेशन या एक महत्वपूर्ण समस्या है ? भले ही हम कहीं भी खड़े हों, ऐसा प्रतीत होता है, कि अगर हमें आई० आर० की पूरी तस्वीर स्थापित करनी है, तो "**धर्म प्रश्न**" पर करीब से नजर डालना ज़रूरी है। धर्म के निम्नलिखित चार तत्व, एक उपयोगी परिचय प्रदान कर सकते हैं।

धर्म का पहला तत्व यह विश्वास है, कि दैवीय प्राणी और शक्तियाँ आज और पूरे इतिहास में राजनीति के अर्थ और अभ्यास के लिए प्रासंगिक हैं। इन प्राणियों को कभी–कभी एक जानने योग्य भगवान या देवताओं के रूप में समझा जाता है, कभी–कभी हमारे प्राचीन अतीत के पौराणिक और प्रतीकात्मक आंकड़ों के रूप में और कभी–कभी भौतिक क्षेत्र से परे, अवैयक्तिक शक्तियों के रूप में। विभिन्न धार्मिक परंपराएँ राजनीति पर धर्म के प्रभाव को अलग–अलग तरीकों से समझती हैं। परंपराएँ जिन्हें हम "**मौलिक**" कह सकते हैं, यह प्रस्तावित करती हैं, कि राजनीति ईश्वरीय आदेशों के अनुसार, समाज को संगठित करने का मामला है। उदाहरण के लिए, ईरान में, देश की सर्वोच्च अदालत एक धार्मिक अदालत है, जो अपने सिद्धांतों को इस्लाम की शिया शाखा से लेती है – जो बहुसंख्यक सुन्नी परंपरा के बाद, दुनिया भर में दूसरी सबसे बड़ी इस्लामी परंपरा है।

संस्कृति के तत्व

हम संस्कृति शब्द को उसी प्रकार समझ सकते हैं, जिस प्रकार हमने धर्म को माना है। संस्कृति के कई प्रस्तावित अर्थ हैं, और ये सरल से जटिल तक भिन्न–भिन्न हैं। जबकि प्रत्येक दृष्टिकोण का हमारे आस–पास की सामाजिक दुनिया को समझने के लिए वास्तविक मूल्य है, हम एक सरल संस्करण का चयन करेंगे, जो अभी भी हमें काम करने के लिए बहुत कुछ देता है। इस प्रकार, हम संस्कृति की समझ को, मानवीय रूप से निर्मित सामाजिक तत्वों के संयुक्त प्रभाव के रूप में शुरू करते हैं, जो लोगों को एक साथ रहने में मदद करते हैं। हम संस्कृति के चार तत्वों का पता लगाएँगे, प्रत्येक तत्व को व्यक्तिगत और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक अनुभव के माध्यम से चित्रित करेंगे।

समाज में प्रचलित सामान्य जीवन

संस्कृति का पहला तत्व सामान्य या साझा जीवन से संबंधित है। जबकि मीडिया रिपोर्टिंग लगातार युद्ध, संघर्ष और विवाद की कहानियों को प्राथमिकता देती प्रतीत होती है, यह भी उतना ही सच है, कि स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाज को उल्लेखनीय स्तर के सहयोग की आवश्यकता होती है। हम एक साथ

कैसे रहते हैं ? आम बंधन कभी–कभी पारिवारिक संबंधों के माध्यम से बनाए जा सकते हैं, जैसा कि कहा जाता है, आप अपने दोस्त चुन सकते हैं, लेकिन आप अपने रिश्तेदारों के साथ फंसे हुए हैं। आर्थिक हित, जो सबसे ज्यादा मायने रखता है, वह आपके पैसे का रंग है, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ दुश्मन का दुश्मन, मेरा दोस्त है। फिर भी, ऐसे अन्य बंधन भी हैं, जो सामाजिक स्तर पर बनते हैं, क्योंकि अलग–अलग लोग समान मान्यताओं, आदतों और मूल्यों को बनाकर, एक ही स्थान पर एक साथ रहने के तरीके ढूँढते हैं। आम जीवन के इसी व्यवहार से अक्सर संस्कृति का उद्भव होता है। खेल आम जीवन के रूप में संस्कृति का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है। आइए फुटबॉल के बारे में सोचें, स्थानीय फुटबॉल क्लबों की स्थापना, विशिष्ट सामुदायिक पहचान पर की जा सकती है। उदाहरण के लिए, ग्रीक पृष्ठभूमि के स्थानीय ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी हेलेनिक एसोसिएशन द्वारा, प्रायोजित टीम के लिए खेल सकते हैं। क्लब किसी विशेष समूह के बजाय समान रूप से, एक इलाके का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

धर्म और संस्कृति : अंतर और समानता

हमने धर्म और संस्कृति के तत्वों का पता लगाया है, और व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से विभिन्न संक्षिप्त उदाहरण पेश किए हैं। हालाँकि, प्रत्येक अवधारणा पर अलग से विचार करना महत्वपूर्ण है, उन विशेष तरीकों पर प्रकाश डालना, जो धर्म और संस्कृति अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करते हैं, उनके बीच स्पष्ट अंतःसंबंध हैं। सिद्धांतकारों ने लंबे समय से, ऐसे लिंक तैयार किए हैं, और ये यहाँ हमारे विचार के लिए उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए, मानवविज्ञानी क्लिफोर्ड गीर्ट्ज ने प्रसिद्ध रूप से धर्म को एक **"सांस्कृतिक प्रणाली"** के रूप में वर्णित किया है, जो मनुष्यों द्वारा हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को अर्थ देने के तरीके के रूप में बनाए गए मिथकों, अनुष्ठानों, प्रतीकों और विश्वासों से बनी है। इस अध्याय में वर्णित धर्म और संस्कृति के तत्वों के बीच समानता पर विचार करें, जैसे कि दोनों खातों में प्रतीकों और कहानियों की भूमिका, और आस्था या संस्कृति, जो जीवन के उच्च मानकों को निर्धारित करती है, उसके अनुसार जीवन की खोज करना। पूछने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है, कि क्या अंतरराष्ट्रीय संबंधों में **"संस्कृति"** को आवश्यक रूप से एक बड़ी और महत्वपूर्ण श्रेणी के रूप में समझा जाना चाहिए ? हमेशा **"धर्म"** को इसके भीतर एक उपसमूह के रूप में रखा जाना चाहिए। ऐसा दृष्टिकोण समझ में आता है, क्योंकि आज दुनिया में कोई भी धर्म पूरे समाज को शामिल नहीं करता है, और कोई भी समाज पूरी तरह से पवित्र नियमों और प्रथाओं के एक सेट के अनुसार नहीं रहता है।

दूसरी ओर, कुछ संदर्भों में धार्मिक अधिकार और पहचान किसी भी अन्य सांस्कृतिक तत्व से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है। उदाहरण के लिए, जब 2003 में अमेरिकी सैनिक सुरक्षा व्यवस्था पर बातचीत करने के लिए, इराकी शहर नजफ में गए, तो शहर के मेयर या पुलिस प्रमुख का सबसे अधिक प्रभाव नहीं था। बल्कि, यह एकांतप्रिय धार्मिक नेता ग्रैंड अयातुल्ला अली अल–सिस्तानी थे, जिनके अधिकार ने, न केवल शहर को प्रभावित किया, बल्कि स्वयं टूटे हुए राष्ट्र को भी प्रभावित किया। एक और उदाहरण लेते हुए, जब 1980 के दशक में कम्युनिस्ट अधिकारियों ने पोलैंड में, हड़ताली गोदी श्रमिकों का सामना किया, तो न केवल यूनियनों ने उनका विरोध किया, बल्कि कैथोलिक चर्च भी था, जिसके पुजारी पवित्र अनुष्ठान करते थे, और सरकार की खुली अवज्ञा में हड़तालियों के साथ एकजुटता से खड़े थे। इन दोनों उदाहरणों में, धर्म के तत्व संस्कृति के तत्वों की तुलना में समान रूप से, यदि अधिक नहीं, प्रमुख हैं। इसलिए, शायद सबसे उपयोगी दृष्टिकोण धर्म के तत्वों और संस्कृति के तत्वों को, एक दूसरे के साथ निरंतर बातचीत में देखना है। हमने प्रत्येक श्रेणी के लिए केवल चार तत्वों का पता लगाया है। कुछ अन्य तत्व क्या हो सकते हैं, और इन तत्वों का व्यक्तिगत और अंतर्राष्ट्रीय जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? ऐसे प्रश्नों की खोज में, हमारी सहायता के लिए कुछ उत्कृष्ट संसाधन मौजूद हैं।

इनमें **टॉफ्ट, फिल्पोट और शाह (2011)** द्वारा आई० आर० में धर्म का परिचय, **हेन्स (2012)** द्वारा वैश्विक दुनिया में धर्म की एक परीक्षा, **हूवर और जॉनस्टन (2012)** द्वारा संपादित धर्म और विदेशी मामलों पर आवश्यक पाठों का एक बड़ा संग्रह शामिल है। ई–इंटरनेशनल रिलेशंस का संपादित संग्रह नेशंस अंडर गॉड हेरिंगटन, मैके और हेन्स 2015। हालाँकि, अब तक हमने जो सरल रूपरेखा प्रदान की है, वह हमें वैश्विक मामलों में धर्म और संस्कृति के बारे में **"क्या और कैसे ?"** सवालों का जवाब देना शुरू करने और उनके बीच कुछ संबंध बनाने में सक्षम बनाएगी।

सारांश

इसका उद्देश्य यह दिखाना था, कि यदि हम अंतरराष्ट्रीय संबंधों के बारे में अपनी समझ को गहरा करना चाहते हैं, तो धार्मिक और सांस्कृतिक कारक मायने रखते हैं। पद्धति प्रत्येक अवधारणा के तत्वों को परिभाषित करने और हमारे व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अनुभव के पहलुओं पर इन तत्वों के प्रभाव पर विचार करने की रही है। उम्मीद है, आप आश्वस्त हैं, कि यदि आप आज विश्व राजनीति के बारे में कुछ सबसे महत्वपूर्ण चर्चाओं में शामिल होना चाहते हैं, तो

धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दों को समझना आवश्यक है। आज आई० आर० से संबंधित ऐसी कोई बात नहीं है, जिसमें धर्म या संस्कृति या दोनों के तत्व शामिल न हों। समान रूप से, अंतिम विचार के रूप में यह पहचानना महत्वपूर्ण है, कि हमने अभी इन मुद्दों का पता लगाना शुरू ही किया है, और हमें धार्मिक और सांस्कृतिक अभिनेताओं और हितों के महत्व पर गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। उन्हें समझने से, हमें और अधिक जटिल और विभाजित दुनिया को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी।

संदर्भ सूची

- **"समकालीन परिवार"**, (2017), नेक्सस ऑफ रिसर्च एंड प्रैक्टिस, पृष्ठ संख्या 25–28.
- **"फैमिली रिसर्च में उभरते तरीके"** (2014) प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या 72.
- **सामाजिक और व्यवहार विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय विश्वकोष (2015).**
- **"पारिवारिक सिद्धांत : एक परिचय"**, (2012), कोनेर लाइब्रेरी स्टैक्स मुख्यालय, पृष्ठ संख्या 32–35.
- **"पारिवारिक, संबंध और देखभाल : एक बहुवचन आधुनिकता में पारिवारिक परिवर्तन : अंतर्राष्ट्रीय संपीड़न में पारिवारिक परिवर्तन के बारे में फ्रीबरर सर्वेक्षण"**, कोनेर लाइब्रेरी, मुख्यालय, 2012, पृष्ठ संख्या 82–97.
- गोहिल वीरेन (2008), **"एक आहट देह की"**, ज्ञान भारती प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 11–17.
- आदित्य नारायण चौपड़ा (2006), **"घरेलू हिंसा कानून, कहीं पुरूषों के लिए हिंसक न बन जाए"**, पंजाब केसरी नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 211.
- चन्द्र, एस० एस० (2002), **"भारत में सामाजिक समस्याएँ"**, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 16–23.
- करात, वृदां (2008), **"भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति"**, ग्रंथ शिल्पी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 152.
- शर्मा, आर० एन० एवं शर्मा, आर० के० (2002), **"सामाजिक विघटन"**, एटलांटिक पब्लिशर्स, पृष्ठ संख्या 109.

- सिंह शरद (2010) **"पिछले पन्नें की औरतें"**, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 42–45.
- दोषी, एस० एल० एवं जैन, पी० सी० (2005), **"भारतीय समाज"**, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, पृष्ठ संख्या 14–21.
- हसनैन, नदीम, (2007), **"समकालीन भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य"**, भारत बुक सेंटर, लखनऊ, पृष्ठ संख्या 156–161.
- सोमाद्रि शर्मा (2012), **"अब तक तेरी यही कहानी"**, राजस्थान पत्रिका, पेज नम्बर 02, अधिगमन तिथि अक्टूबर 2014.

****